

बच्चे देवयानी



1

वे रंगों को बिखेर देते हैं कागज पर
और तलाशते रहते हैं उनमें
औघड रूपाकार

सब चीजों के लिए
कोई नाम है उनके पास

हर आकार के पीछे
कोई कहानी
बनती बुनती रहती है उनके मन में

कभी पूछ कर तो देखो
यह क्या बनाया है तुमने
झरने की तरह बह निकलती हैं बातें

प्रपात की तरह नहीं
झरने की तरह
मीठी

मन्थर
कहीं थोड़ा ठहर जाती
और फिर

जहां राह देखती
उसी दिशा में बह निकलती

भाषा जहां कम पड़ने लगती है
उचक कर थाम लेते हैं कोई सिरा
मानो

गिलहरी फुदक कर चढ़ गई हो
बेरी के झाड़ पर

उनसे जब बात करो
तो बोलो इस तरह
जैसे बेरी का झाड़
बढ़ा देता है अपनी शाख को
गिलहरी की तरफ
वे

फुदक कर थाम लेंगे
आपके सवालियों का सिरा
पर जवाब की भाषा
उनकी अपनी होगी

2

उसने अपनी उँगलियों के पोरों को
डुबोया हरे रंग में
और
खींच दी हैं लकीरें
हृदय पर

उसने गाढ़े नीले से
रंग दिया है फलक को

सुर्ख लाल रंग को
बिखेर दिया है उसने
घर के आंगन में

पीले फूलों से ढक दिया है उसने
आस पास की वनस्पतियों को
उसे हर बार चाहिए
नया सफ़ेद कागज
जिसे हर बार
सराबोर कर देना चाहता है वह रंगों से
बच्चा रंगरेज

3

धूप और बारिश के बीच
आसमान में तना इन्द्रधनुष हैं
मेरे बच्चे

आच्छादित है फलक
उनकी सतरंगी आभा से
जिसके आर पार पसरा है
हरा सब ओर
उनके पीछे
कहीं ज्यादा गाढ़ा हो जाता है
आसमान का नीला
कहीं ज्यादा सरसब्ज हो जाती है धरती ◆



लेखक परिचय

लगभग 10 वर्षों तक पत्रकारिता के बाद करीब 4 वर्ष तक
स्वतंत्र रूप से कार्य। फिलहाल दिगन्तर, जयपुर में कार्यरत।